

विद्वत्त्व परिषद द्वारा समीक्षित पत्रिका

ISSN 2349-1906

साहित्य

वर्ष 8 अंक 34 अप्रैल-जून, 2023

यात्रा

साहित्यिक-सांस्कृतिक यात्रा की साक्षी

संपादक

प्रो. कलानाथ मिश्र



ए.एन. कॉलेज पटना के सत्येन्द्र नारायण सभागार में आयोजित पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय स्थापना दिवस समारोह के अवसर पर व्याख्यान देते हुए बिहार के महामहिम राज्यपाल सह कुलाधिपति श्री राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर। मंच पर बिहार के शिक्षा मंत्री, विश्वविद्यालय के कुलपति, प्रतिकुलपति एवं अन्य।



यशस्विनी साहित्यकार, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की पूर्व आचार्य चंद्रकला त्रिपाठी अपनी सद्यः प्रकाशित चर्चित उपन्यास 'चन्ना तुम उगिहो' साहित्य यात्रा के संपादक को भेंट करती हुई।



चंद्रगुप्त साहित्य महोत्सव के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान उद्बोधन प्रस्तुत करते हुए डॉ. कलानाथ मिश्र साथ मंचासीन हैं गगनांचल के संपादक डॉ. आशीष कांधवे एवं डॉ. अशोक कुमार ज्योति।

विद्वत् परिषद् द्वारा समीक्षित पत्रिका

साहित्य यात्रा

साहित्यिक-सांस्कृतिक यात्रा का साक्षी

संपादक

प्रो० कलानाथ मिश्र

साहित्य यात्रा

साहित्यिक-सांस्कृतिक यात्रा का साक्षी

सदस्यता फार्म

‘साहित्य यात्रा’ विशिष्ट सदस्यता	:	1100/-
एक वर्ष (4 अंक)	:	500/- (डाक खर्च सहित)
तीन वर्ष (12 अंक)	:	1500/- (डाक खर्च सहित)
संस्थागत मूल्य (3 वर्ष)	:	1500/-
आजीवन सदस्यता	:	15000/-
विदेश के लिए (3 अंक)	:	60 डॉलर

(पटना के बाहर के चेक पर कृपया बैंक कमीशन के 40/- रुपये अतिरिक्त जोड़ दें।)

उक्त दर के अनुरूप मैं चेक / ड्राफ्ट संलग्न कर रहा हूँ। ऑन लाईन खाते में डाल दिया हूँ (रेफरेंस नं.) कृपया मुझे ग्राहक बना कर मेरी प्रति निम्न पते पर भिजवाएँ।

नाम :-	पद :-
पता :-	
दूरभाष 1 :	दूरभाष 2 :
शहर :	पिन नं. :-
देश :	ईमेल -
संकाय / विभाग / विद्यालय :	

भुगतान की जानकारी

नकद/बैंक रकम : रु. द्वारा.....

डी0डी0/प्रत्यक्ष हस्तांतरण/चेक/बैंक का नाम :.....

डी0डी/चेक/स्थानान्तरण संख्या :..... दिनांक :.....

दिनांक :	हस्ताक्षर (या पूरा नाम लिखें)	
----------	----------------------------------	--

ऑनलाइन हस्तांतरण विवरण :- साहित्य यात्रा, पंजाब नेशनल बैंक,
एस.के. पुरी शाखा, पटना-1

खाता क्रमांक- 6236000100016263, IFSC- PUNB0623600

वेबसाइट - www.sahityayatra.com

यहाँ से काटिए

साहित्य यात्रा

साहित्यिक-सांस्कृतिक यात्रा का साक्षी

वर्ष-8

अंक-34

अप्रैल-जून, 2023

परामर्शी

डॉ. सूर्य प्रसाद दीक्षित

डॉ. प्रेम जनमेजय

डॉ. हरीश नवल

सम्पादकीय सलाहकार

श्री आशीष कंधवे

समीक्षक मंडल

प्रो. शैलेन्द्र कुमार चौधरी

(पूर्व विभागाध्यक्ष, स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग,
कॉलेज ऑफ कॉमर्स)

प्रो. प्रतिभा सहाय

(पूर्व आचार्य, स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग)

डॉ. सुजीत दूबे

(अध्यक्ष एवं एसोसिएट प्रोफेसर,
मनोविज्ञान विभाग, ए.एन. कॉलेज, पटना)

उप-संपादक

डॉ. सत्यप्रिय पाण्डेय

डॉ. करुणा पीटर 'कमल'

सहायक संपादक

डॉ. रवीन्द्र पाठक

अमित कुमार मिश्र

आवरण - चित्र

अंतरिक्ष, चित्रकार एवं फोटोग्राफर

साज-सज्जा

निशिकान्त / मनोज कुमार

संपादक

प्रो० कलानाथ मिश्र



साहित्य यात्रा में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखकों के हैं जिनसे संपादक, प्रकाशक, मुद्रक एवं पत्रिका से जुड़े किसी भी व्यक्ति का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। सभी विवादों का निपटारा पटना क्षेत्र के अन्तर्गत सीमित है। पत्रिका में संपादन से जुड़े सभी पद गैर-व्यावसायिक एवं अवैतनिक हैं।

साहित्य यात्रा

साहित्यिक-सांस्कृतिक यात्रा का साक्षी

RNI No. : BIHHINO5272

ISSN 2349-1906

विश्व विद्यालय अनुदान आयोग (UGC) द्वारा पूर्व अनुमोदित

विद्वत् परिषद् द्वारा समीक्षित पत्रिका

© स्वत्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशित सामग्री के पुनः उपयोग के लिए लेखक,

अनुवादक अथवा साहित्य यात्रा की स्वीकृति अनिवार्य है।

संपादकीय कार्यालय

‘अभ्युदय’

ई-112, श्रीकृष्णपुरी

पटना-800001 (बिहार)

मोबाइल : 8434880332/09304302308/09835063713

ई-मेल : sahityayatra@gmail.com

kalanath@gmail.com

वेब साइट : <http://www.sahityayatra.com>

मूल्य : ₹ 100/- (एक सौ रुपये मात्र)

प्राप्ति स्थान :

पटना-

आलोक कुमार सिंह, मैगजीन हाउस, शालीमार स्टूडियो के पास,
सहदेव महतो मार्ग, बोरिंग रोड, पटना-800001

दिल्ली -

1. आर.के. मैगजीन सेन्टर, क्रिश्चियन कॉलोनी, पटेल चेस्ट,
दिल्ली, वि.वि., दिल्ली-11007
2. राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, मंडी हाउस, नई दिल्ली

शुल्क ‘साहित्य यात्रा’ के नाम पर भेजें।

‘साहित्य यात्रा’ त्रैमासिक डॉ. कलानाथ मिश्र के स्वामित्व में और उनके द्वारा ‘अभ्युदय’
ई-112, श्रीकृष्णपुरी, पटना-800001, बिहार से प्रकाशित तथा ज्ञान गंगा क्रियेशन्स,
पटना से मुद्रित। स्वामी/संपादक/प्रकाशक/मुद्रक : प्रो. कलानाथ मिश्र।

अनुक्रम

संपादकीय	07
आत्मकथ्य	
मैंने किताबों से एक घर बनाया है प्रकाश मनु	11
आलेख	
प्रेमचंद की सर्वश्रेष्ठ कहानी : उसकी कसौटी और खोज कमल किशोर गोयनका	26
यात्रा-संस्मरण	
कोलकाता में किष्किंधा रामकुमार कृषक	48
संस्मरण	
जब 'नेपाली' की कविता सुनने जाकिर हुसैन 'तिलक मैदान' जा पहुँचे श्री पारस कुंज	61
आलेख	
आलोचना का समग्र : एक आलोचक के नोट्स कृष्ण बिहारी पाठक	64
स्त्री सशक्तिकरण की पुरोधा : अहिल्या सुमेधा पाठक	74
कहानी	
कंबल पद्मा मिश्रा	80

पुस्तक समीक्षा	
आरंभ : एक शृंखलाबद्ध संस्मरणात्मक आत्मकथ्य राजेन्द्र सिंह गहलौत	86
आलेख	
वामिक जौनपुरी बृजेश आनन्द राय	88
संस्मरण	
प्रतिरोध के गीतकार डॉ. धनंजय सिंह डॉ. शैलेन्द्र श्रीवास्तव	96
आलेख	
मुंशी प्रेमचंद के उपन्यासों में किसान चेतना डॉ. करुणा पीटर 'कमल'	103
पुस्तक समीक्षा	
चन्ना तुम उगिहो : स्त्री स्वरूप के विविध रूप डॉ. श्रेयसी सिंह	108
संवेदनायें साझा करती हैं सरिता कुमारी की कहानी 'हारी नहीं हूँ मैं' बाबू लाल मधुकर	115
आलेख	
आंतरिक मुक्ति की तलाश में 'तीस पार की नदिया' तेजस पूनियां	117
भारतीय संस्कृति और हिन्दी डॉ. अर्चना त्रिपाठी	123
दस्तावेज	
अवतिका सितम्बर-अक्टूबर 1956 बैल का विद्रोह श्री मधुकर गंगाधर	128
कविता	
तथागत श्री उदयन सूपकार	134
अपनी खुद की धरती श्री उदयन सूपकार	135

सत्य और सौन्दर्य के रचनाकार : विष्णु प्रभाकर

“मैंने बीते हुए युग कि कथा लिखी थी
वह सच नहीं हुई
तुम आने वाले क्षण की कहानी लिख रहे हो
वह भी सच नहीं होगी
काल सबको ग्रस लेगा/शेष रह जायेगा दंभ
मेरा, तुम्हारा, उसका/तुम जानते हो किसका
बोलो नहीं, क्योंकि....
जो भी तुम बोलोगे झूठ साबित होगा।”

ये पंक्तियाँ विष्णु प्रभाकर की ‘झूठ’ कविता से उद्धृत हैं। सच ही कहा है कवि ने। यह सनातन सत्य है कि काल के प्रहार से कुछ नहीं बचता। सब काल के गाल में समा जाता है।

प्रभाकर जी ने उपन्यास, कहानी, नाटक, निबंध, कविता, संस्मरण, बाल साहित्य आदि अनेक विधाओं में विपुल लेखन कर हिन्दी को समृद्ध किया। विष्णु प्रभाकर का जन्म 21 जून, सन 1912 को मीरापुर, जिला मुजफ्फरनगर में हुआ था और 11 अप्रैल, 2009 को उनका देहावसान हुआ। यह साहित्य यात्रा का अप्रैल-जून अंक है। सोचा इस बार के संपादकीय में विष्णु प्रभाकर पर ही केंद्रित कुछ विचार व्यक्त करूँ।

साहित्य यात्रा का अप्रैल-जून अंक आपके हाथ में है। आज विष्णु प्रभाकर जी के व्यक्तित्व के कुछ महत्वपूर्ण पहलू पर विचार कर रहा हूँ। विष्णु प्रभाकर गंभीर चिंतक थे। अनेक बिंदुओं पर उनके विचार हमें सोचने को मजबूर करते हैं। उनके कुछ विचार उद्धृत कर रहा हूँ।

“जीवन एक लंबी यात्रा है। मैं तो सदा घुमक्कड़ ही रहा हूँ। यात्रा में पड़ावों का होना भी अनिवार्य है। मैं अपनी पत्नी और परिवार के अन्य सभी सदस्यों के सहयोग से, पड़ावों के खट्टे-मीठे स्वादों को सँजोए, पथ के काँटों की छुवान के एहसास और प्रकृति की अनुपम देन फूलों की मुझको समर्पित गुदगुदाहट के एहसास के सहारे अपने पथ पर निरंतर अग्रसर हूँ। चित्र का रेखांकन तो शायद सीख लिया अभी उसमें चितरे रंग भरना सीख रहा हूँ। पता नहीं कितना सीख पाऊँगा। आगे की यात्रा में पता नहीं कहाँ तक उजाला और कहाँ